



विंशोत्तरी दशा रिपोर्ट

आपके जीवन-काल का दशा-आधारित सम्पूर्ण विश्लेषण

श्री अभय शर्मा (काल्पनिक) जी हेतु व्यक्तिगत रिपोर्ट

नाम	अभय शर्मा (काल्पनिक)
जन्म तिथि व समय	12 जुलाई 1992 • 09:45
जन्म स्थान	जयपुर
लग्न • राशि • नक्षत्र	सिंह • वृश्चिक • ज्येष्ठा
वर्तमान दशा	सूर्य महादशा (2023–2029)
रिपोर्ट तिथि	24 सितम्बर 2026 • प्रातः 8:01

॥ पारस वाणी ॥

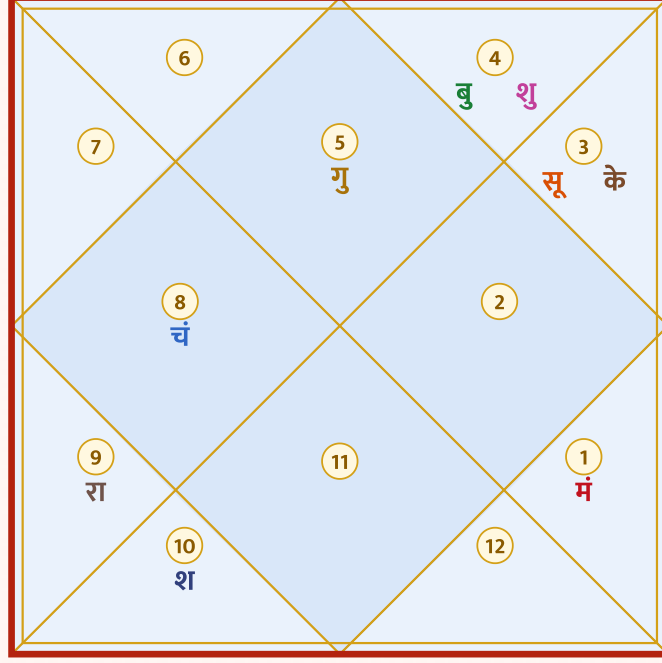
parasvani • वैदिक ज्ञान, आधुनिक तकनीक

यह रिपोर्ट खगोलीय Swiss Ephemeris (लाहिरी अयनांश) गणना पर आधारित है



जन्म कुंडली — ग्रह स्थिति एवं प्रभाव

कुंडली परिचय



जन्म-कुंडली (उत्तर भारतीय पद्धति) · लाहिरी अयनांश

ग्रह	राशि	भाव	क्षेत्र-प्रभाव
सूर्य	मिथुन	11	आत्मबल व प्रतिष्ठा — लाभ व आय
चंद्र	वृश्चिक	4	मन व भावनाएँ — सुख व माता
मंगल	मेष	9	ऊर्जा व साहस — भाग्य व धर्म
बुध	कर्क	12	बुद्धि व व्यापार — व्यय व अध्यात्म
गुरु	सिंह	1	ज्ञान व भाग्य — व्यक्तित्व व स्वास्थ्य
शुक्र	कर्क	12	सुख व कला — व्यय व अध्यात्म
शनि (वक्री)	मकर	6	कर्म व अनुशासन — सेवा व प्रतिस्पर्धा
राहु (वक्री)	धनु	5	महत्वाकांक्षा व नवाचार — बुद्धि व संतान
केतु (वक्री)	मिथुन	11	अध्यात्म व मोक्ष — लाभ व आय

विंशोत्तरी दशा — अंतर्दशा तालिकाएँ

अ भी च ल र ही व अ ग ली म हा द शा • वर्तमान ◀ चिह्न से

सूर्य महादशा ◀

19/04/2023 – 19/04/2029

अंतर्दशा	से	तक
सूर्य	19/04/2023	07/08/2023
चंद्र	07/08/2023	06/02/2024
मंगल	06/02/2024	12/06/2024
राहु	12/06/2024	07/05/2025
गुरु	07/05/2025	23/02/2026
शनि ◀	23/02/2026	05/02/2027
बुध	05/02/2027	13/12/2027
केतु	13/12/2027	19/04/2028
शुक्र	19/04/2028	19/04/2029

चंद्र महादशा

19/04/2029 – 19/04/2039

अंतर्दशा	से	तक
चंद्र	19/04/2029	17/02/2030
मंगल	17/02/2030	18/09/2030
राहु	18/09/2030	19/03/2032
गुरु	19/03/2032	19/07/2033
शनि	19/07/2033	17/02/2035
बुध	17/02/2035	19/07/2036
केतु	19/07/2036	17/02/2037
शुक्र	17/02/2037	19/10/2038
सूर्य	19/10/2038	19/04/2039

योगिनी दशा — अंतर-योगिनी तालिकाएँ

अ भी च ल र ही व अ ग ली यो गि नी • वर्तमान ◀ चिह्न से

भद्रिका योगिनी ◀

स्वामी बुध • 5 वर्ष • 20/08/2024 – 20/08/2029

अंतर-योगिनी	से	तक
भद्रिका	20/08/2024	01/05/2025
उल्का	01/05/2025	01/03/2026
सिद्धा ◀	01/03/2026	19/02/2027
संकटा	19/02/2027	31/03/2028
मंगला	31/03/2028	21/05/2028
पिंगला	21/05/2028	30/08/2028
धान्या	30/08/2028	30/01/2029
भ्रामरी	30/01/2029	20/08/2029

उल्का योगिनी

स्वामी शनि • 6 वर्ष • 20/08/2029 – 21/08/2035

अंतर-योगिनी	से	तक
उल्का	20/08/2029	21/08/2030
सिद्धा	21/08/2030	21/10/2031
संकटा	21/10/2031	19/02/2033
मंगला	19/02/2033	21/04/2033
पिंगला	21/04/2033	20/08/2033
धान्या	20/08/2033	19/02/2034
भ्रामरी	19/02/2034	21/10/2034
भद्रिका	21/10/2034	21/08/2035



कुंडली परिचय व दशा-तंत्र

अ ध्या य 1

कुंडली परिचय व दशा-तंत्र

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली एक ऐसे व्यक्ति की कहानी कहती है जिसके भीतर असाधारण बल और विस्तार की क्षमता है — पर उसे पाने का रास्ता धैर्य और अनुशासन से होकर जाता है। **सिंह लग्न, गुरु का लग्न में विराजमान होना, और मंगल का नवम भाव में स्वराशि में बैठना** — यह त्रिकोण आपकी कुंडली की सबसे बड़ी शक्ति है।

लग्न और मूल स्वभाव

सिंह लग्न वालों में नेतृत्व, आत्म-सम्मान और एक स्वाभाविक गरिमा होती है — और आपके लग्न में गुरु विराजमान हैं, मित्र राशि में, युवा अवस्था में। **यह गजकेसरी योग का अंश है** — गुरु चंद्र से केंद्र में हैं — जो यश, बुद्धि और समाज में सम्मान देने वाला माना जाता है। साथ ही वेशी योग भी बन रहा है, जो सत्यनिष्ठा और परोपकार का संकेत है। लग्नेश सूर्य एकादश भाव में मिथुन राशि में हैं — आपके स्वभाव में सामाजिकता, बड़े नेटवर्क और लाभ की ओर एक स्वाभाविक झुकाव है।

दशा-तंत्र का ढाँचा — अभी कहाँ खड़े हैं आप

अप्रैल 2023 से आपकी **सूर्य महादशा** चल रही है, जो अप्रैल 2029 तक रहेगी। इस पूरे छह वर्ष के काल में सूर्य ही केंद्र में हैं — और सूर्य आपके लग्नेश हैं, आपकी पहचान के कारक। इसलिए यह महादशा सामान्य नहीं, **आपके अपने होने की, अपनी दिशा खोजने की महादशा है।**

अभी चल रही अंतर्दशा है **सूर्य-शनि** — फ़रवरी 2026 से फ़रवरी 2027 तक। शनि आपकी कुंडली में षष्ठ भाव में स्वराशि मकर में वक्री हैं — वे छठे और सातवें दोनों भावों के स्वामी हैं। यह अंतर्दशा संघर्ष, अनुशासन और धैर्य की माँग करती है। सूर्य-शनि का यह संयोग — लग्नेश और दोनों कठिन भावों के स्वामी का मेल — **कर्म की परीक्षा का दौर है, और शास्त्र में ऐसी स्थिति के लिए कहा गया है कि धैर्य रखने वाले को शनि पूरा बदला लौटाते हैं।**

आगे की दशाओं का क्रम

फ़रवरी 2027 में **सूर्य-बुध** की अंतर्दशा आएगी — बुध आपके बारहवें भाव में हैं, शत्रु राशि में। यह विश्लेषण, लेखन और गहरी सोच का समय होगा, पर बाहरी परिणाम देर से मिल सकते हैं।

दिसम्बर 2027 में **सूर्य-केतु** — केतु एकादश भाव में हैं, इस अंतर्दशा में लाभ और आध्यात्मिक झुकाव का मिला-जुला रंग रहेगा।

अप्रैल 2028 से **सूर्य-शुक्र** — और यहाँ ध्यान दें: शुक्र आपके तृतीय व दशम दोनों भावों के स्वामी हैं, पर बारहवें भाव में अस्त हैं। यह अंतर्दशा करियर व संबंध के क्षेत्र में मिश्रित फल देगी।

अप्रैल 2029 से **चंद्र महादशा** का दस वर्षों का चक्र आरंभ होगा — तब आपकी आयु लगभग 37 वर्ष होगी।

मुख्य बातें

- **सिंह लग्न + गुरु लग्न में** — गजकेसरी व वेशी योग, यश और बुद्धि का बल
- **सूर्य महादशा (2023–2029)** — पहचान और दिशा तय करने का महाकाल
- **अभी सूर्य-शनि अंतर्दशा (फ़रवरी 2027 तक)** — धैर्य, अनुशासन और कर्म की परीक्षा
- **दो पद्धतियाँ मिश्रित संकेत दे रही हैं** — विंशोत्तरी में शनि का प्रभाव, योगिनी में बुध का — इसलिए यह दौर एकरंगा नहीं, बहुआयामी है
- **हर्ष विपरीत राजयोग** इस कुंडली में है — कठिनाई के बाद अप्रत्याशित उन्नति का वादा; अभी का संघर्ष व्यर्थ नहीं जाएगा

॥ शास्त्र-प्रमाण ॥

गजकेसरीसञ्जातस्तेजस्वी धनवान् भवेत् ।

मेधावी गुणसम्पन्नो राजप्रियकरो नरः ॥

गजकेसरी योग में जन्मा व्यक्ति तेजस्वी और धनवान होता है, बुद्धिमान और गुणों से भरा — तथा बड़े लोगों का प्रिय बनता है।

— बृहत् पाराशर होरा शास्त्र, अध्याय ३६



वर्तमान महादशा का विस्तृत फल

अ ध्या य 2

वर्तमान महादशा का विस्तृत फल

सूर्य महादशा — अप्रैल 2023 से अप्रैल 2029

यह दशा आपके जीवन का वह अध्याय है जब आप स्वयं को परखते हैं — न किसी और की कसौटी पर, बल्कि अपनी ही आँखों में। सूर्य आपकी कुंडली में लग्नेश हैं — अर्थात् आपकी देह, व्यक्तित्व और आत्म-सम्मान के स्वामी — और वे इस समय ग्यारहवें भाव में बैठे हैं। यह स्थिति लाभ, यश और इच्छापूर्ति का संकेत देती है, पर साथ में यह भी कहती है कि **यह सफलता सीधी राह से नहीं, बल्कि भीड़ से ऊपर उठकर आएगी।**

सूर्य का असली रंग — बल भरपूर, पर अवस्था मृत

सूर्य इस कुंडली के सबसे बलवान ग्रह हैं — षड्बल में 9.86 रूप, जो पराशर के 5 रूप के न्यूनतम से लगभग दुगुना है। यह बल बताता है कि सूर्य की महादशा में आपके जीवन में **कुछ बड़ा और स्थायी जोड़ने की क्षमता** है।

किंतु यहाँ एक महत्वपूर्ण बात है — सूर्य की अवस्था **मृत** है। इसका अर्थ यह नहीं कि दशा बेकार है; इसका अर्थ यह है कि जो फल मिलना चाहिए वह **देर से और कम मात्रा में** आएगा। आप परिश्रम पूरा करेंगे, पर परिणाम तुरंत हाथ नहीं आएगा — बीच में एक रुकावट, एक प्रतीक्षा अवश्य होगी। इसी को समझ लेना इस पूरी दशा की सबसे बड़ी तैयारी है।

साथ ही, कुंडली में **सूर्य-ग्रहण दोष** है — केतु ग्यारहवें भाव में सूर्य के साथ हैं। इससे आत्मविश्वास में उतार-चढ़ाव आता है। कभी बहुत ऊर्जा, कभी अचानक भीतर से खालीपन — यह स्वाभाविक है, इसे कमजोरी मत समझिए।

करियर और पहचान — ग्यारहवाँ भाव सूर्य की असली ताकत

सूर्य ग्यारहवें भाव में हैं — यह लाभ और सामाजिक नेटवर्क का भाव है। इस दशा में आपकी **पहचान, आपका नाम और आपके सम्पर्क** — ये तीनों काम आते हैं। जो लोग आपको जानते हैं, वे आपके काम में सहयोग करेंगे।

दशमांश (D10) में सूर्य लग्न कुम्भ में पहले भाव में बैठे हैं — यह करियर-कुंडली में बहुत अच्छा स्थान है। **करियर में इस दशा के दौरान आप किसी संगठन या समूह का चेहरा बन सकते हैं।** नेतृत्व की भूमिका, किसी परियोजना की जिम्मेदारी, या लोगों के सामने स्वयं को प्रस्तुत करने का अवसर — ये इस समय आएंगे।

वेशी योग भी आपकी कुंडली में है — सूर्य से द्वितीय भाव में ग्रह। यह योग सत्यनिष्ठा और यश देता है। इस दशा में जो भी करेंगे, उसमें ईमानदारी और सीधापन आपकी सबसे बड़ी पूँजी रहेगी।

चल रही अंतर्दशा — सूर्य-शनि (फ़रवरी 2026 से फ़रवरी 2027)

अभय जी, इस समय आप सूर्य महादशा में **शनि की अंतर्दशा** से गुजर रहे हैं। यह संयोग कठिन लगता है — सूर्य और शनि परस्पर शत्रु हैं — पर इसे सही ढंग से देखें तो यह **अनुशासन और परिणाम** का काल है।

शनि आपके छठे भाव में स्वराशि मकर में हैं — यह **हर्ष विपरीत राजयोग** का आधार है। छठे भाव का स्वामी जब दुःस्थान में ही बैठ जाए, तो शत्रु और बाधाएँ अपने-आप क्षीण होती हैं। इस अंतर्दशा में आपके प्रतिस्पर्धी या जो लोग आपके रास्ते में रुकावट बनते थे, वे कमजोर पड़ेंगे।

किंतु शनि वक्री हैं, और षड्बल में अवस्था कुमार — फल आधा मिलेगा, और **गोचर में शनि इस समय आठवें भाव (मीन) में वक्री हैं।** यह समय श्रम का है, जल्दी का नहीं। जो बो रहे हैं वह फरवरी 2027 के बाद अंकुरित होगा।

योगिनी दशा में इस समय **भद्रिका-सिद्धा** चल रही है — बुध और शुक्र का संयोग। बुद्धि, वाणी और व्यापारिक निर्णयों के लिए यह अच्छा समय है। विंशोत्तरी और योगिनी अलग-अलग इशारे कर रहे हैं — इसलिए यह काल **मिला-जुला** है; एक साथ श्रम भी और कहीं-कहीं सहजता भी।

आगे आने वाली अंतर्दशाएँ — क्या बदलेगा

- **सूर्य-बुध (फरवरी 2027 से दिसम्बर 2027):** बुध बारहवें भाव में शत्रु राशि में हैं, पर बुध की अवस्था कुमार और बल पर्याप्त है। यह काल **लेखन, संवाद और योजना बनाने** का होगा। कुछ व्यय या किसी बड़े निर्णय की तैयारी हो सकती है।
- **सूर्य-केतु (दिसम्बर 2027 से अप्रैल 2028):** केतु ग्यारहवें भाव में सूर्य के साथ हैं। यह थोड़ा अनिश्चित समय होगा — भीतर से मन इधर-उधर भटकेगा। ध्यान और एकाग्रता इस काल की दवा है।
- **सूर्य-शुक्र (अप्रैल 2028 से अप्रैल 2029):** शुक्र बारहवें भाव में अस्त हैं — यह अंतर्दशा **व्यय और निजी जीवन** में उलझन ला सकती है। इस समय बड़े निवेश और बड़े फैसलों में सतर्कता रखिएगा।

मुख्य बातें

- **सूर्य महादशा आत्म-पहचान और सामाजिक यश का काल है** — परिणाम धीरे आएं, पर टिकाऊ होंगे।
- अभी चल रही शनि अंतर्दशा (फरवरी 2027 तक) **श्रम और अनुशासन माँगती है** — शॉर्टकट इस समय काम नहीं करेगा।
- **फरवरी 2027 से बुध की अंतर्दशा** संवाद, योजना और व्यावसायिक गतिविधि के लिए बेहतर रहेगी।
- सूर्य-ग्रहण दोष के कारण आत्मविश्वास में उतार-चढ़ाव स्वाभाविक है — **इसे कमजोरी नहीं, इस दशा का स्वभाव समझिए।**
- इस पूरी महादशा में आपका **सबसे बड़ा उपाय** है — रोज सूर्योदय के आसपास उठना, धूप में थोड़ा समय बिताना, और जहाँ भी आप खड़े हों वहाँ **आगे** रहने का साहस रखना।



चल रही अंतर्दशा व प्रत्यंतर

अ ध्या य 3

चल रही अंतर्दशा व प्रत्यंतर

अभय शर्मा जी, इस समय आपके जीवन में **सूर्य महादशा-शनि अंतर्दशा** का संयोग चल रहा है — और यह संयोग दो बिल्कुल विपरीत स्वभाव के ग्रहों का मिलन है। एक ओर सूर्य जो प्रकाश, अधिकार और तेज़ी चाहता है; दूसरी ओर शनि जो धैर्य, देरी और अनुशासन सिखाता है। इन दोनों के बीच यह दौर कभी-कभी भारी लग सकता है — पर इसके भीतर एक बड़ी परीक्षा भी है और एक बड़ा पुरस्कार भी।

शनि अंतर्दशा का स्वभाव — यह समय क्या माँग रहा है?

शनि अंतर्दशा फ़रवरी 2026 से फ़रवरी 2027 तक चलेगी — अभी आप इसके ठीक मध्य में हैं। आपकी कुंडली में शनि छठे भाव में स्वराशि मकर में विराजमान हैं, और वक्री भी हैं।

छठा भाव है कर्म, संघर्ष, शत्रु और स्वास्थ्य का। शनि यहाँ स्वराशि में बैठे हैं — यानी बल तो है, पर वह बल आराम से नहीं, मेहनत से मिलता है। शनि अंतर्दशा में जो काम छोड़ा हुआ था, वह वापस आता है। जो जिम्मेदारियाँ टाली थीं, वे सामने खड़ी हो जाती हैं। **यह समय शॉर्टकट का नहीं, टिककर काम करने का है।**

शनि का वक्री होना यह भी बताता है कि इस दौर में कुछ पुराने मामले — चाहे नौकरी के हों, सम्बंधों के हों, या किसी अधूरे काम के — दोबारा सामने आ सकते हैं। यह कोई दंड नहीं, यह पूरा करने का अवसर है।

हर्ष विपरीत राजयोग भी यहाँ काम कर रहा है — छठे भाव के स्वामी (शनि) का यही भाव में बैठना कठिनाई के बाद अप्रत्याशित उन्नति देता है। इस अंतर्दशा में जो भी बाधा आए, उसके पार एक अच्छा मोड़ छिपा हुआ है।

आज का प्रत्यंतर — चंद्र-मंगल (14-15 सितम्बर)

आज इस समय **चंद्र प्रत्यंतर में मंगल सूक्ष्म दशा** चल रही है — यह सूक्ष्म संयोग केवल आज और कल तक का है।

चंद्र आपकी कुंडली में चौथे भाव में नीच अवस्था में हैं — मन में एक अस्थिरता, घर या परिवार से जुड़ी कोई चिंता इस वक़्त महसूस हो सकती है। मंगल नवें भाव में स्वराशि में बैठे हैं — साहस और निर्णय का बल है।

इस एक-दो दिन की सूक्ष्म स्थिति में एक तरफ़ मन थोड़ा बेचैन रह सकता है, दूसरी तरफ़ कोई पुराना निर्णय लेने की ऊर्जा भी मिल सकती है। **आज के दिन घर या परिवार से जुड़े किसी विषय पर जल्दबाज़ी से बचें** — मंगल की ऊर्जा को काम में लगाएँ, विवाद में नहीं।

गोचर में आज चंद्र तुला राशि (जन्म-लग्न से तीसरे भाव) में स्वाति नक्षत्र में हैं — यह भाव साहस और संचार का है। किसी से खुलकर बात करने का, या कोई लंबित काम आगे बढ़ाने का यह अच्छा क्षण है।

आगे आने वाला समय — फ़रवरी से दिसम्बर 2027

शनि अंतर्दशा के बाद **फ़रवरी 2027 से सूर्य-बुध अंतर्दशा** आरंभ होगी। बुध आपकी कुंडली में बारहवें भाव में शत्रु राशि में हैं — यह अंतर्दशा थोड़ी मिली-जुली रहेगी। व्यापार, लेखन, संचार में गति आ सकती है, पर धन-खर्च और छिपी उलझनों पर भी ध्यान रखना होगा। यह वह समय है जब बोलने से अधिक लिखना और योजना बनाना काम आएगा।

दिसम्बर 2027 से सूर्य-केतु अंतर्दशा — यह दौर अंदर की ओर मुड़ने का है। केतु ग्यारहवें भाव में हैं — बाहरी लाभ की दौड़ कम होगी, भीतर का स्पष्टता बढ़ेगी। कुछ पुराने सम्बंध या काम छूट सकते हैं, पर यह छूटना आगे की राह साफ़ करेगा।

मुख्य बातें

- **अभी सूर्य-शनि अंतर्दशा (फ़रवरी 2026-फ़रवरी 2027)** — यह धैर्य और अनुशासन का दौर है; हर्ष विपरीत राजयोग के कारण कठिनाई के बाद उन्नति निश्चित है।
- **शनि वक्री और छठे भाव में** — पुराने अधूरे काम वापस आएँगे; इन्हें इस बार पूरा करें, टालें नहीं।
- **आज चंद्र-मंगल सूक्ष्म दशा** — मन बेचैन पर ऊर्जा भरपूर; जल्दबाज़ी से बचें, काम में लगाएँ।
- **फ़रवरी 2027 से बुध अंतर्दशा** — संचार व व्यापार में गति, पर खर्च और उलझनों पर नज़र रखें।
- **इस पूरे दौर का एक ही सार** — जो धीरे-धीरे बनता है, वही टिकता है; शनि इसी का नाम है।



पूर्व दशाओं का प्रभाव (जीवन-यात्रा)

अ ध्या य 4

आपकी जीवन-यात्रा के हर पड़ाव पर दशाओं की छाप स्पष्ट दिखती है — कुछ साल जहाँ ज़मीन हिली, कुछ जहाँ आप और मज़बूत होकर उठे। केतु महादशा की विदाई से शुक्र महादशा का लंबा सफ़र, और अब सूर्य महादशा में स्वयं को परखने का समय — यह क्रम आकस्मिक नहीं, आपकी कुंडली की अपनी भाषा है।

केतु महादशा का अंतिम दौर (लगभग 1996–2003)

आपका जन्म केतु महादशा के उत्तरार्ध में हुआ। केतु आपकी कुंडली में भाव 11 में मिथुन राशि में हैं — लाभ और इच्छापूर्ति का भाव। **केतु का स्वभाव है छोड़ना, सिखाना, और भीतर की ओर ले जाना।** बचपन के शुरुआती वर्ष इसीलिए शायद कुछ अनिश्चित, कुछ असामान्य रहे हों — एक जगह मन न टिकना, या घर-परिवार में कोई उथल-पुथल। केतु की सूर्य अंतर्दशा (नवंबर 1997 से मार्च 1998) में — जब आप मात्र 5-6 वर्ष के थे — पिता-पक्ष या घर में कुछ ऐसा हुआ होगा जिसने मन पर छाप छोड़ी। यह याद न भी हो, पर उसकी परछाई आज भी स्वभाव में कहीं दिखती है।

शुक्र महादशा — जड़ें और उड़ान (2003–2023)

यह बीस वर्ष की लंबी महादशा आपके जीवन की सबसे बड़ी घड़नेवाली अवधि रही। **शुक्र आपकी कुंडली में भाव 12 में हैं — अस्त और शत्रु राशि में।** यह स्थिति बताती है कि शुक्र का फल सहज नहीं मिला — रिश्तों में, सुख-साधन में, या करियर की दिशा में बार-बार कुछ हाथ आते-आते रह गया।

- **शुक्र-चंद्र अंतर्दशा (2007–2009):** चंद्र भाव 4 में नीच हैं। यह समय मन की उथलता का रहा — घर, माता या भावनात्मक स्थिरता पर दबाव। पर गजकेसरी योग (चंद्र से केंद्र में गुरु) ने सँभाला।
- **शुक्र-राहु (2010–2013):** यह दौर कई नई राहें खोलनेवाला पर भ्रमित करने वाला भी रहा। राहु भाव 5 में हैं — बुद्धि, निर्णय और आकांक्षाओं पर असर। कुछ बड़े सपने देखे होंगे, कुछ टूटे भी।
- **शुक्र-गुरु (2013–2016):** यह **शुक्र महादशा का सबसे अच्छा पड़ाव था।** गुरु भाव 1 में लग्न में बैठे हैं — मित्र राशि में, युवा अवस्था में, भरपूर बल के साथ। इन तीन वर्षों में शिक्षा, करियर या व्यक्तित्व का कोई बड़ा विस्तार हुआ होगा। गजकेसरी योग यहाँ पूरी तरह सक्रिय था।
- **शुक्र-शनि (2016–2019):** शनि स्वराशि मकर में भाव 6 में हैं — वक्री। **हर्ष विपरीत राजयोग** यहाँ काम करता है। यह दौर श्रम का था — नौकरी, प्रतिस्पर्धा, स्वास्थ्य या दिनचर्या पर ज़ोर पड़ा। पर उसी संघर्ष में आप और धारदार हुए।
- **शुक्र-बुध (2019–2022):** बुध भाव 12 में शत्रु राशि में। लेन-देन, संचार या योजनाओं में जटिलता रही। कोविड-काल भी इसी में आया — विस्थापन, अनिश्चितता।
- **शुक्र-केतु (2022–2023):** एक अध्याय बंद हुआ। कुछ पुराना छूटा, कुछ नया दिखा।

मुख्य बातें

- **केतु महादशा के शुरुआती वर्षों ने एक संवेदनशील, भीतर की ओर झुके स्वभाव की नींव रखी।**
- शुक्र महादशा के बीस वर्ष उतार-चढ़ाव से भरे रहे — शुक्र के अस्त व दुर्बल होने के कारण फल कभी पूरा नहीं मिला, पर गुरु की उपस्थिति ने हर बार सँभाला।
- **शुक्र-गुरु (2013–16) और शुक्र-शनि (2016–19) दो ऐसे पड़ाव रहे जिन्होंने आपको वह बनाया जो आप आज हैं।**
- हर कठिन अंतर्दशा में हर्ष विपरीत राजयोग और गजकेसरी योग ने सुरक्षा का काम किया — यह आपकी कुंडली की असली शक्ति है।
- अब सूर्य महादशा (2023–2029) में यही पूरी यात्रा का निचोड़ सामने आएगा — अपने दम पर खड़े होने का समय।



आगामी दशाएँ व भविष्य-दृष्टि

अ ध्या य 5

आगामी दशाएँ व भविष्य-दृष्टि

अभय शर्मा जी, अभी आप सूर्य-शनि की कठिन परीक्षा से गुजर रहे हैं — पर यह परीक्षा जल्द समाप्त होगी और फिर दशाओं का एक ऐसा क्रम आएगा जो आपको नई ऊँचाई की ओर ले जाने की क्षमता रखता है। **फ़रवरी 2027 से आपकी दशाएँ क्रमशः हल्की और अनुकूल होती जाएँगी।**

फ़रवरी 2027 — सूर्य-बुध अंतर्दशा: बुद्धि और वाणी का समय

फ़रवरी 2027 में जब सूर्य-बुध अंतर्दशा आरंभ होगी, तब आप लगभग 35 वर्ष के होंगे — जीवन का वह पड़ाव जब दिशा तय हो चुकी होती है और अब उसे गति देनी होती है।

बुध आपकी कुंडली में द्वितीय और एकादश भाव के स्वामी हैं — अर्थात् धन, वाणी और लाभ दोनों का कारकत्व उनके पास है। हालाँकि बुध भाव 12 में शत्रु राशि में बैठे हैं, **इस अंतर्दशा में उनका संबंध सूर्य से होगा जो आपके लग्नेश हैं और भाव 11 में विराजमान हैं** — यह संयोग लाभ-भाव को सक्रिय करता है। नवांश में बुध मकर राशि (भाव 5) में हैं — जो बुद्धि और योजना की दृष्टि से ठीक-ठाक स्थिति है।

यह दशा दिसम्बर 2027 तक चलेगी। इस अवधि में:

- लेखन, संवाद या तकनीकी काम में प्रगति की संभावना है
- पुराने नेटवर्क से नया लाभ मिल सकता है
- धन से जुड़ी उलझनें धीरे-धीरे सुलझने लगेंगी — पर बुध की कमजोर स्थिति के कारण **यह फल देर से और कम मात्रा में** आएगा

योगिनी दशा में इस समय भद्रिका (बुध) चल रही है — इसलिए **बुध का यह विषय दोनों पद्धतियों से एक ही दिशा में इशारा करता है, जो इसे थोड़ा अधिक विश्वसनीय बनाता है।** बुद्धि, लेखन और व्यापार-संवाद के क्षेत्र में जो भी काम लंबे समय से रुका हो, वह इस दौर में आगे बढ़ाने का प्रयास करें।

दिसम्बर 2027 — सूर्य-केतु अंतर्दशा: भीतर की ओर मुड़ने का समय

दिसम्बर 2027 से अप्रैल 2028 तक सूर्य-केतु का संयोग रहेगा। केतु आपकी कुंडली में भाव 11 में मिथुन राशि में हैं — सूर्य के साथ। यह युति "सूर्य-ग्रहण दोष" का एक पक्ष है जो आपकी कुंडली में पहले से है, और केतु की अंतर्दशा में यह दोबारा सक्रिय होगा।

यह समय बाहरी उपलब्धि का नहीं, भीतरी स्थिरता का है। केतु वैराग्य और गहराई का ग्रह है — इस दौर में बड़े निर्णय, नई शुरुआत या जोखिम टालें। यह समय ध्यान, एकांत और आत्म-मंथन के लिए सबसे उपयुक्त है। चंद्र कुंडली में केतु भाव 8 में हैं — जो गहरे मनोविज्ञान और रहस्य का भाव है। इस अवधि में मन में पुराने प्रश्न उठ सकते हैं, पर वे आपको तोड़ने नहीं, पुनर्निर्माण के लिए आते हैं।

यह अवधि छोटी है — केवल चार महीने। **इसे विराम की तरह लें, विफलता की तरह नहीं।**

अप्रैल 2028 — सूर्य-शुक्र अंतर्दशा: जीवन में सुख और संबंध

अप्रैल 2028 में जब सूर्य-शुक्र अंतर्दशा आरंभ होगी, तब आप लगभग 36 वर्ष के होंगे। यह अंतर्दशा अप्रैल 2029 तक चलेगी।

शुक्र आपकी कुंडली में तृतीय और दशम भाव के स्वामी हैं — पराक्रम और कर्म दोनों। पर शुक्र इस समय भाव 12 में शत्रु राशि में और अस्त अवस्था में हैं — **षड्बल भरपूर है पर अवस्था मृत है, इसलिए फल नगण्य से कम मिलेगा।** नवांश में शुक्र सिंह राशि (भाव 12) में हैं — वहाँ भी 12वें भाव में। यह स्थिति कहती है कि शुक्र की दशा में **कर्म-क्षेत्र में सीधी सफलता कठिन रहेगी, पर घर-परिवार और निजी सुख में कुछ राहत** अवश्य मिल सकती है।

एक महत्वपूर्ण बात — **गोचर में अक्टूबर 2028 के आसपास शनि राशि बदलेंगे (मीन से मेष में प्रवेश)** — जो आपके लग्न से नवम भाव होगा। यह परिवर्तन भाग्य-भाव को सक्रिय करता है और शुक्र अंतर्दशा के कठिन प्रभाव को कुछ संतुलित कर सकता है। इस समय को धैर्य और संबंधों को सँवारने में लगाएँ।

अप्रैल 2029 — चंद्र महादशा: जीवन का नया अध्याय

अप्रैल 2029 से अप्रैल 2039 तक — पूरे दस वर्ष — चंद्र महादशा रहेगी। तब आप लगभग 37 वर्ष के होंगे और यह दशा 47 वर्ष की आयु तक साथ रहेगी।

चंद्र आपकी कुंडली में भाव 4 में वृश्चिक राशि में नीच के हैं — यह चिंता का विषय है। षड्बल में बल पर्याप्त (8.04) है पर **अवस्था बाल है** — अर्थात् फल का केवल एक चौथाई मिलेगा। नवांश में चंद्र मीन राशि में भाव 7 में हैं — यह स्थिति विवाह और साझेदारी के संदर्भ में कुछ सहायक है।

गजकेसरी योग आपकी कुंडली में है — चंद्र से केंद्र (भाव 1) में गुरु हैं। **यह योग चंद्र महादशा में विशेष रूप से जागृत होगा।** यश, बुद्धि और समाज में सम्मान — ये सब इस दशा में मिल सकते हैं, बशर्ते आप चंद्र को सँभालते चलें।

- **मन की अस्थिरता** इस दशा की सबसे बड़ी चुनौती होगी — नीच चंद्र का यही स्वभाव है
- **माता और घर-परिवार** के विषय इस दशा में केंद्र में आएँगे (चंद्र भाव 4 में)
- **भावनात्मक निर्णय** लेने से बचें — विशेषकर चंद्र-राहु और चंद्र-शनि अंतर्दशाओं में

• चंद्र कुंडली में गुरु भाव 10 में हैं — **कर्म-क्षेत्र में उन्नति की स्पष्ट संभावना** इस महादशा के मध्य में (2033–2036) दिखती है

मुख्य बातें

- **फरवरी 2027** से दशाएँ हल्की होने लगेंगी — सूर्य-बुध का दौर बुद्धि और संवाद के काम में अनुकूल है
- **दिसम्बर 2027 से अप्रैल 2028** — केतु की छोटी अंतर्दशा भीतर की ओर मुड़ने का समय है, इसे विराम की तरह लें
- **अप्रैल 2028 से 2029** — शुक्र अंतर्दशा में धैर्य रखें; फल देर से आएगा, पर संबंध और घर-परिवार में राहत मिलेगी
- **अप्रैल 2029** — चंद्र महादशा का आरंभ, जो दस वर्षों का लंबा अध्याय है; गजकेसरी योग इस दशा को यशस्वी बना सकता है, पर मन को स्थिर रखना इसकी सबसे बड़ी साधना होगी
- **इस पूरे भविष्य-काल में एक सूत्र याद रखें** — आपकी कुंडली में मंगल नवम भाव में स्वराशि और गुरु लग्न में हैं; ये दोनों आपकी असली पूँजी हैं — साहस और विवेक। जो भी दशा आए, ये दोनों आपके साथ हैं।



दशा अनुसार जीवन-क्षेत्र (करियर, धन, संबंध)

अध्याय 6

अभय शर्मा जी, सूर्य-शनि की यह अंतर्दशा तीनों क्षेत्रों — करियर, धन और संबंध — पर एक साथ असर डाल रही है। **यह दौर गति का नहीं, गहराई का है** — जो नींव अभी मज़बूत करेंगे, वही अगले दशक का आधार बनेगी।

करियर — शनि की परीक्षा, पर दिशा स्पष्ट है

आपकी कुंडली में सूर्य लग्नेश हैं और एकादश भाव (लाभ का भाव) में विराजमान हैं — यानी आपकी पहचान और करियर का सीधा जुड़ाव लाभ व उपलब्धि से है। पर अभी सूर्य की अंतर्दशा में शनि उपस्थित हैं — और शनि षष्ठ भाव (रोग-शत्रु-ऋण-सेवा) में स्वराशि मकर में बैठे हैं। यह युति बताती है कि **करियर में अभी श्रम ज़्यादा और पहचान कम दिख रही है।**

दशमांश (D10) में — जो करियर की असली कुंडली है — लग्न कुम्भ है, और सूर्य वहाँ लग्न में ही बैठे हैं। यह अच्छी स्थिति है — आपका कार्य-क्षेत्र में एक मज़बूत स्वभाविक उपस्थिति है। पर गुरु वहाँ द्वादश भाव में हैं, जो बताता है कि अभी बड़े मौके परदे के पीछे पक रहे हैं, सामने नहीं आए।

फरवरी 2027 से सूर्य-बुध अंतर्दशा आएगी — और बुध का संबंध बुद्धि, वाणी, लेखन, विश्लेषण और व्यापार से है। बुध आपके ग्यारहवें भाव के स्वामी भी हैं। उस समय आप 35 वर्ष के होंगे — यह वह उम्र है जब करियर में एक बड़ी छलाँग लगाई जा सकती है। गोचर में गुरु उस समय वृश्चिक या धनु राशि की ओर बढ़ रहे होंगे — जो आपके भाग्य भाव को प्रभावित करेगा।

अभी के लिए — **शनि के साथ चलने का मतलब है अनुशासन और धैर्य।** जो काम सौंपा गया है, उसे बिना शिकायत के पूरा करते रहें।

शॉर्टकट इस दौर में काम नहीं करेगा।

धन — आमदनी बनती है, पर बाहर भी जाती है

एकादश भाव (लाभ) में सूर्य और केतु दोनों हैं — सूर्य-ग्रहण दोष की यह स्थिति बताती है कि **आमदनी के रास्ते हैं, पर कभी-कभी वह पूरी हाथ में नहीं रहती।** द्वादश भाव (व्यय) में बुध और शुक्र — दोनों शत्रु राशि में — बता रहे हैं कि खर्चे अनायास बढ़ते हैं।

इस समय योगिनी भद्रिका-सिद्धा चल रही है (मार्च 2026 से फ़रवरी 2027 तक) — सिद्धा का स्वामी शुक्र है, और शुक्र की प्रकृति सुख-साधन में रुपया लगाने की होती है। यानी **इस वर्ष धन आने की संभावना है, पर उतना ही सुख-व्यय पर भी जाने की।**

अष्टकवर्ग में द्वितीय भाव (धन भाव) के शोधित बिंदु केवल 3 हैं — यह बता रहा है कि धन-संचय के क्षेत्र में अभी उतना बल नहीं। इसलिए बड़े निवेश या जोखिम वाले निर्णय फ़रवरी 2027 तक टालें तो बेहतर।

नवम भाव के शोधित बिंदु 13 हैं — और मंगल वहाँ स्वराशि में बैठे हैं। यह बता रहा है कि भाग्य और दीर्घकालिक आर्थिक स्थिरता आपकी पक्ष में है — बस अभी थोड़ा और सँभलकर चलना है।

संबंध — मन भीतर, पर रिश्ते माँगते हैं उपस्थिति

सप्तम भाव के स्वामी शनि हैं — और वे षष्ठ भाव में वक्री बैठे हैं। शनि का वक्री होना बताता है कि **रिश्तों में अपेक्षाएँ और वास्तविकता के बीच एक खिंचाव है।** सप्तम भाव के शोधित बिंदु मात्र 3 हैं — यानी इस क्षेत्र में सहजता कम है, प्रयास ज़्यादा चाहिए।

चंद्र चतुर्थ भाव में नीच अवस्था में हैं — और चंद्र कुंडली में वे लग्न में बैठे हैं। इसका अर्थ है कि **मन पर गृहस्थी का बोझ महसूस होता है, पर जताने में हिचकिचाहट है।** गुरु की दृष्टि सप्तम भाव पर है — जो रिश्ते में एक सहज आस्था और गुरुत्व देती है। यह दृष्टि रिश्ते को टूटने नहीं देती।

गोचर में गुरु अभी कर्क राशि (जन्म-लग्न से द्वादश भाव) में हैं — जो चिंतन और अंतर्मुखता का समय है। **अक्टूबर 2026 तक गुरु इसी भाव में रहेंगे** — इस समय जीवनसाथी या निकट संबंधों से खुलकर बात करना लाभदायक होगा, मन-ही-मन बोझ उठाने से नहीं।

मंगल की दृष्टि चतुर्थ भाव पर है — घर में कभी-कभी तनाव का माहौल इसी से आता है।

मुख्य बातें

- **करियर में अभी श्रम का दौर है** — पहचान फ़रवरी 2027 के बाद बुध की अंतर्दशा में मिलेगी

- **धन आएगा पर बचत पर ध्यान दें** — बड़े जोखिम वाले निर्णय अभी नहीं
- **रिशतों में मौजूद रहें** — गुरु की दृष्टि सप्तम भाव पर आधार दे रही है, बस संवाद बनाए रखें
- **अक्टूबर 2026 के बाद गुरु का राशि-परिवर्तन** नई ऊर्जा लाएगा — तब से तीनों क्षेत्रों में थोड़ी राहत दिखेगी
- शनि के साथ चलने का सबसे सरल उपाय: **समय की पाबंदी और एक काम रोज बिना नागा** — यही इस दौर की सबसे बड़ी साधना है



दशा-काल हेतु उपाय व मार्गदर्शन

अ ध्या य 7

दशा-काल हेतु उपाय व मार्गदर्शन

सूर्य-शनि की इस अंतर्दशा में दो विपरीत स्वभाव के ग्रह एक साथ चल रहे हैं — एक प्रकाश और अधिकार चाहता है, दूसरा धैर्य और श्रम माँगता है। इस दौर में उपाय का अर्थ कोई अनुष्ठान नहीं, बल्कि **अपने जीवन को इन दोनों ग्रहों की भाषा में जीना है।**

सूर्य के साथ चलना — आत्म-सम्मान को सँभालें

आपके सूर्य लग्नेश हैं और एकादश भाव में हैं, पर अवस्था मृत है — अर्थात् उनकी आवाज़ इस समय दबी हुई है। ऊपर से शनि की दृष्टि आठवें भाव पर है और केतु लग्न पर — यह सब मिलकर आत्मविश्वास को कहीं न कहीं कुंद करता है।

उपाय यह नहीं कि रोज सूर्य को जल दें — उपाय यह है कि:

- सूर्योदय से पहले उठें और 15-20 मिनट धूप में रहें — यह शरीर और मन दोनों को सूर्य से जोड़ता है
- रीढ़ सीधी रखने वाला कोई एक व्यायाम रोज करें — सूर्य नमस्कार सबसे उपयुक्त है, क्योंकि यह लग्नेश का सीधा उपचार है
- घर या काम में जहाँ आप **आगे** खड़े हो सकते हैं, वहाँ से मत हटें — छोटा हो या बड़ा, नेतृत्व का अभ्यास जारी रखें

शनि के साथ चलना — धैर्य ही इस दौर की पूँजी है

शनि आपके षष्ठ भाव में स्वराशि मकर में वक्री हैं। वे सप्तमेश भी हैं। शनि की यह अंतर्दशा फ़रवरी 2027 तक चलेगी — तब आप लगभग 35 वर्ष के होंगे। यह समय शॉर्टकट का नहीं, **नींव का है।**

- **समय की पाबंदी** — यही शनि का सबसे बड़ा उपाय है। जो काम तय किया, उसे उसी समय पर करें
- किसी ज़रूरतमंद, बुजुर्ग या सेवक की **सचमुच** मदद करें — दिखावे की नहीं, मन से
- हर्ष विपरीत राजयोग आपकी कुंडली में है — शनि कठिनाई के बाद अप्रत्याशित उन्नति देंगे, पर केवल तब जब आप टिके रहें

मंत्र व दान — संक्षिप्त पर सार्थक

- **सूर्य मंत्र** — रविवार को प्रातः "ॐ घृणि सूर्याय नमः" का 108 बार जाप; ताँबे के बर्तन में जल अर्पित करें
- **शनि के लिए** — शनिवार को सरसों तेल का दीपक; काले तिल का दान किसी जरूरतमंद को
- योगिनी दशा इस समय भद्रिका-सिद्धा चल रही है — बुद्धि और वाणी में गति है। **लिखने, बोलने या सीखने का कोई एक काम** इस दौर में अवश्य जोड़ें — यह दोनों पद्धतियों का मिला-जुला संकेत है

माणिक — इस दौर का सबसे उपयुक्त रत्न

सूर्य महादशा चल रही है और माणिक आपका जीवन-रत्न भी है — इसलिए यह दोहरा उपयुक्त है। सूर्य की मृत अवस्था को बल देने के लिए माणिक धारण करना इस समय सबसे सार्थक कदम है। रविवार को सुबह स्वर्ण में, अनामिका अँगुली में धारण करें। यह रत्न koustubhgems.com पर उपलब्ध है — हर पत्थर प्रमाणित और सील-बंद मिलता है।

मुख्य बातें

- सूर्योदय पर उठना और रीढ़ का व्यायाम — लग्नेश की मृत अवस्था का सबसे सीधा उपाय
- समय की पाबंदी और बिना दिखावे की सेवा — शनि को सधाने का एकमात्र रास्ता
- रविवार सूर्य मंत्र, शनिवार तिल दान — सरल पर नियमित
- **माणिक धारण करें** — सूर्य महादशा और जीवन-रत्न, दोनों एक साथ
- फ़रवरी 2027 तक टिके रहें — उसके बाद बुध अंतर्दशा राहत लेकर आएगी

॥ शास्त्र-प्रमाण ॥

यस्य यश्च यदा दुःस्थः स तं यत्नेन पूजयेत् ।

एषां धात्रा वरो दत्तः पूजिताः पूजयिष्यथ ॥

जिसका जो ग्रह पीड़ित हो, वह यत्नपूर्वक उसकी उपासना करे। ब्रह्मा ने ग्रहों को वर दिया है — "पूजित होकर तुम भी पूजक का मान रखोगे।"

— बृहत् पाराशर होरा शास्त्र, अध्याय ८४

॥ ॐ शुभम् ॥

❖ ParasVani · पारस वाणी ❖ विंशोत्तरी दशा रिपोर्ट ❖ अभय शर्मा (काल्पनिक) ❖

यह AI-सहायित वैदिक विश्लेषण मार्गदर्शन हेतु है — निर्णय अपने विवेक से लें।